भजन

तर्ज.. हमसे का भूल गई

अब तो पहचान हुई कैसी साहेबी है तेरी
आके तूने ही जगाई सोई आतम है मेरी

1. ऐसा लगता था मेरी मूल सगाई ही नहीं
जैसे नजरों से कभी तूने पिलाई ही नहीं

2. है बड़ा इश्क मेरा ये मेरी भूल ही थी
मैं को मैं भूल गई तू ही तू जान गई

3. वाणी का जाम पिया तूने हमें ऐसा दिया
रूहें तेरी जाग गई तुमको पहचान लिया